International Journal of Social Science and Humanities
www.humanitiesjournals.com
Online ISSN: 2664-8628 Print ISSN: 2664-861X
Received: 18-01-2025, Accepted: 19-02-2025, Published: 07-03-2025
Volume 7, Issue 2, 2025, Page No. 6-8

राजनीतिक व्यवस्था एवं सामाजिक व्यवस्था में सुधारों के संदर्भ में भारतीय ज्ञान एवं परंपरा का महत्व

रेनू ठाकुर
अतिथि विद्वान, राजनीति विज्ञान विभाग, महाविद्यालय रामपुरा नीमच, मध्यप्रदेश, भारत

सारांश
भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था विश्व की सर्वश्रेष्ठ व्यवस्थाओं में सर्वोच्च मानी जाती हैं जिसका कारण यही है कि यह प्राचीन भारतीय ज्ञान एवं परंपराओं के मूल्यों को आज भी स्वयं में समाहित किए हुए हैं जहां सामाजिक व्यवस्था में रहने वाले लोग परस्पर भाईचारे सद्भाव नैतिकता सहयोग आदि मूल्य के साथ सामाजिक संबंधों को मजबूत बनाए रखते हैं इसी तरह राजनीतिक व्यवस्था के आदर्शों में भी लोकतांत्रिक शक्ति जनता के हाथों में प्रदत्त है जिससे स्पष्ट है कि देश के शासक हेतु देश की जनता महत्वपूर्ण है ना कि राजनीतिक सत्ता क्योंकि शासक प्रजा हेतु पिता समान होता हैं और ये मूल्य प्राचीन ग्रंथों रामायण महाभारत ऋग्वेद एवं उपनिषद आदि से ग्रहण किए हैं इस प्रकार ये सिद्ध होता हैं कि ये सभी ग्रंथ वर्तमान भारतीय लोकतान्त्रिक व्यवस्था की नींव है।
परंतु बढ़ते हुए विकास के साथ पाश्चात्य संस्कृति के संपर्क में आने के कारण धीरे–धीरे लोकतांत्रिक व्यवस्था के मूल्य का महत्व कम होता जा रहा है जहां प्रशासनिक व्यवस्था का उद्देश्य जन कल्याण कम और सत्ता प्राप्ति का लालच बढ़ता जा रहा है इसी कारण राजनीतिक एवं सामाजिक व्यवस्था में सुधार हेतु एक बार फिर से भारतीय ज्ञान एवं परंपरा के मूल्यों को प्रति देश के जन प्रतिनिधियों में जगाना आवश्यक हो गया हैं भारतीय ज्ञान और परंपरा हमारे प्रशासनिक ढांचे में गहरा महत्व रखती है। चाहे वो प्रशासनिक नैतिकता हो नीति–निर्माण की प्रक्रियाएँ या रोज़मर्रा के प्रशासनिक कार्य भारतीय परंपरा और विचारधारा का समावेश कई स्तरों पर देखने को मिलता है।

मुख्य शब्दः राजनीतिक एवं सामाजिक व्यवस्था, सुधार की आवश्यकता, स्वरूप एवं उपाय, भारतीय ज्ञान एवं परंपरा का महत्व

प्राचीन पारंपरिक एवं धार्मिक ग्रंथों में वर्णित सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था का स्वरूप

सामाजिक व्यवस्था

महाभारत के सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाग शान्तिपर्व के अनुसार प्राचीन समय में राज्य एवं सरकार जैसी कोई संस्था नहीं थी उस समय समाज में सद्भाव एवं खुशी का स्वर्ण युग था सभी लोग सुखी एवं शांतिपूर्ण जीवन जीते थे
परंतु यह सामंजस्यपूर्ण एवं सुखी जीवन कृषि एवं कला के उद्भव एवं विकास के परिणामस्वरूप छिन्न–भिन्न हो गया जिसमें लोगों के उत्पादन एवं उपभोग की क्षमता में वृद्धि हुई जिससे उन्होंने घर अनाज एवं पशुओं के रूप में अपनी भौतिक संपत्ति एकत्रित करना आरंभ किया परंतु उन्हें में अधिक शक्तिशाली लोगों ने कमजोर व्यक्तियों की संपत्ति को छिनना शुरू किया इसलिए कहा जा सकता है कि उस समय की सामाजिक व्यवस्था धीरे–धीरे मत्स्य न्याय के सिद्धांत पर अग्रसर होने लगी जिसके अनुसार शक्तिशाली व्यक्ति का ही बोलबाला था अर्थात वह कमज़ोर की संपत्ति पर अधिकार जताने और न देने पर अत्याचार करने हेतु भी स्वतंत्र था इसी व्यवस्था पर नियंत्रित स्थापित करने हेतु समाज के प्रबुद्ध वर्ग द्वारा कानून एवं न्याय की स्थापना हेतु समझौता हुआ जिससे समझौते पर आधारित राज्य की स्थापना हुई.

भारत की राजनीतिक व्यवस्था

भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था विश्व की सबसे बड़ी व्यवस्था है जिसका संविधान लिखित एवं सबसे बड़ा है क्योंकि इस देश के संविधान के अंतर्गत जनता को सर्वाधिक व्यापक एवं मौलिक अधिकार प्राप्त है जिसके अंतर्गत वे अपना संपूर्ण सामाजिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास करने के साथ–साथ अपने देश के प्रतिनिधि को चुनने हेतु स्वतंत्र हैं परंतु हम प्राचीन समय से देखते आ रहे हैं कि जिस तरह एक बुरी शासन व्यवस्था को समाप्त करने हेतु नई शासन व्यवस्था का जन्म होता हैं।
जैसे सामंतवाद को मिटाने हेतु पूंजीवाद आया और उसे समाप्त करने हेतु मार्क्सवाद एवं सर्वहारा वर्ग की अवधारणा उत्पन्न हुई और इन सब के मिश्रित रूप को हम वर्तमान में कहीं साम्यवाद तो कहीं लोकतंत्र के रूप में देख रहे हैं परंतु धीरे–धीरे ये व्यवस्थाएं भी निरंकुश एवं भ्रष्टाचारी बनने लगती हैं और यही दुर्गुण भारत देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था में भी दिखाई देने लगे हैं जिसमें देखने को तो लोकतांत्रिक शक्ति जनता के हाथों में है परंतु जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधि अपनी सत्ता एवं कुर्सी को बचाने हेतु कुछ चुनिंदा पूंजीपतियों के हाथों कठपुतली बनकर रह जाते हैं चाहे सरकार किसी भी पार्टी की हो आरंभ उसका लोकतांत्रिक जनकल्याण के उद्देश्यों को पूरा करने हेतु ही होता है परंतु उसका वास्तविक उद्देश्य मात्र सत्ता प्राप्ति रह जाता है जो की एक लोकतांत्रिक देश के अस्तित्व हेतु उचित नहीं हैं

सामाजिक व्यवस्था में सुधार

ऋग्वेदीक काल में सामाजिक व्यवस्था का स्वर्ण युग था जिसमें सामाजिक व्यवस्था जाति पर आधारित न होकर कर्म व्यवस्था पर आधारित थी जहां बाल विवाह सती प्रथा दहेज़ प्रथा आदि कुरीतियों का कोई स्थान नहीं था महिलाओं को हर क्षेत्र में समान अधिकार प्राप्त था परंतु मुगलों के आक्रमण एवं अंग्रेजी शासन के परिणामस्वरूप भारत में सांप्रदायिक भावना जाति व्यवस्था महिला उत्पीडन जैसे महिलाओं का अपहरण एवं बलात्कार बाल विवाह सती प्रथा कभी अंग्रेजों द्वारा तो कभी मुस्लिमों द्वारा पर आए दिन महिलाओं का शोषण सामाजिक व्यवस्था का उच्च एवं निम्न वर्ग में विभाजन के फलस्वरूप सामाजिक व्यवस्था कर्म पर आधारित न होकर जाति पर सिमट कर रह गई वर्तमान समय जहां मुगलों एवं अंग्रेजों से मुक्ति पाएं सदियां बीत चुकी हैं परंतु उस समय की कुप्रथाओं से आज भी आजादी नहीं मिल पाई हैं आज भी भारतीय समाज जाति व्यवस्था की संकीर्ण मानसिकता से ग्रस्त हैं महिलाओं को सामाजिक प्रतिष्ठा भी केवल संवैधानिक एवं क़ानूनी कागजों पर ही प्राप्त हैं वास्तविक धरातल पर तो महिलाओं से संबंधित

कुप्रथाएं आज भी जब की तस विद्यमान हैं पहले तो हम इल्जाम लगाते थे अंग्रेजों और मुसलमानों पर अब तो महिलाओं की अस्मिता लुट जातीं हैं उनके ही अपने देश और अपने घर पर ऊंचे पद पर देश में सम्मान पाने वाली महिला की अपने घर में ही कोई कद्र नहीं होती है पुरुष की नजरों में महिला के रोजगार और उसके आत्म सम्मान की आज भी कोई कीमत नहीं है और आज भी पुरुष के लिए उसका अहम् ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण है इसलिए भारतीय सामाजिक व्यवस्था में सुधार हेतु आवश्यक हो चुका है कि प्राचीन ऋग्वेद में प्रचलित सामाजिक व्यवस्था के सिद्धांतों नियमों एवं मूल्यों को एक बार फिर से वर्तमान व्यवस्था में समाहित किया जाए केवल कागज पर नहीं हकीकत के धरातल पर महिलाओं को उनका सम्मान सुरक्षा एवं बराबरी के अधिकार दिए जाएं।

सामाजिक व्यवस्था के संचालन और विभिन्न वर्गों को प्रदान किए जाने वाले आरक्षण का आधार व्यक्ति की योग्यता और देश का प्रतिनिधित्व करने वाले नेताओं के चुनाव का आधार भी उनके सत्कर्म और उनकी योग्यता हो तभी देश में सही मायने में वास्तविक लोकतांत्रिक एवं सामाजिक समानता पर आधारित समाज की स्थापना संभव होगी

राजनीतिक व्यवस्था में सुधार

किसी भी लोकतांत्रिक देश में वहां की राजनीतिक व्यवस्था के संचालन का मुख्य स्रोत उस देश की जनता होती हैं जो कि चुनाव के माध्यम से देश के प्रतिनिधियों के हाथों में देश की बागडोर सौंपती हैं इसलिए आवश्यक है कि इन जनप्रतिनिधियों का चुनाव का आधार भी एक निश्चित शैक्षणिक योग्यता एवं उनके द्वारा किए गए सत्कर्म हों क्योंकि जिस पद पर निर्वाचित होते हैं उसकी उन्हें वास्तविक जानकारी होना आवश्यक है केवल उनकी सहायता हेतु उच्च स्तर के शिक्षित सचिव रखने से देश का सही प्रतिनिधित्व संभव नहीं है क्योंकि यदि वे अपने पद से संबंधित कार्यों के प्रति सजग नहीं रहेंगे तो उन में सदैव सत्ता का लालच ही विद्यमान रहेगा और इसी से देश में भ्रष्टाचार बढ़ता हैं प्राचीन समय कें महाभारत के महत्वपूर्ण ग्रंथ शान्तिपर्व एवं ऋग्वेद में भी शासक को प्रजा पालक के रूप में दर्शाया गया है जिसका तात्पर्य हैं कि एक देश का शासक ही वहां की जनता के लिए सब कुछ होता है परंतु यदि देश के शासक कर्तव्य विमुख होकर केवल सत्ता प्राप्ति में लगे रहेंगे तो देश का जन कल्याण असंभव हैं इसलिए प्राचीन ग्रंथों में वर्णित शासन व्यवस्था के आदर्शों नियमों एवं मूल्यों को वर्तमान राजनीति के सिद्धांतों में शामिल कर प्रशासनिक व्यवस्था में सुधार करना अत्यंत आवश्यक हैं।

कुछ वास्तविक उदाहरण जहाँ भारतीय परंपरागत मूल्यों का सफलतापूर्वक सामाजिक व्यवस्था में समावेश किया गया हैः

- **नैतिकता और मूल्य**

प्रशासन में पारदर्शिता ईमानदारी और सेवा भावना के मूल्य भारतीय परंपरा से निकले हैं। रामायण महाभारत और अन्य ग्रंथों में नैतिकता के आदर्श उदाहरण मिलते हैं जो आज भी प्रशासनिक अधिकारियों के लिए प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं।

- **समाज–सेवा का दृष्टिकोण**

भारतीय परंपरा में सेवा परमो धर्मः (सेवा सबसे बड़ा धर्म है का विचार प्रमुख है। प्रशासनिक अधिकारी जनसेवा को अपने कर्तव्यों का मुख्य हिस्सा मानते हैं।

- **समुदाय का सम्मिलन**

स्थानीय स्वायत्त शासन की परंपरा प्राचीन काल से ही भारतीय समाज का हिस्सा रही है। पंचायत और ग्राम सभा जैसी व्यवस्थाएँ इसी परंपरा का हिस्सा हैं जो आज भी ग्रामीण प्रशासन का महत्वपूर्ण अंग हैं।

- **पर्यावरण संरक्षण**

भारतीय परंपरा में प्रकृति और पर्यावरण का संरक्षण महत्वपूर्ण है। प्रशासनिक नीतियाँ और योजनाएँ भी इस विचारधारा को ध्यान में रखकर बनाई जाती हैं।

- **आध्यात्मिकता और मानसिक संतुलन**

भारतीय परंपरा में ध्यान योग और आत्म–चिंतन के माध्यम से मानसिक संतुलन बनाए रखने पर जोर दिया जाता है। यह प्रशासनिक अधिकारियों को अपने कार्यों में सामंजस्य और धैर्य बनाए रखने में मदद करता है।

- **संतुलित विकास**

विकास की अवधारणा में संतुलन का महत्व भारतीय परंपरा से प्रेरित है। चाहे वो आर्थिक विकास हो या सामाजिक प्रशासनिक नीतियों में सभी वर्गों और समुदायों का संतुलित विकास सुनिश्चित करने का प्रयास किया जाता है।

- **नैतिकता और मूल्य**

भारतीय ज्ञान और परंपरा के इन मूल्यों का समावेश हमारी प्रशासनिक व्यवस्था को न केवल मजबूत बनाता है बल्कि उसे मानवीय और सामुदायिक दृष्टिकोण से भी समृद्ध करता है।

कुछ वास्तविक उदाहरण जहाँ भारतीय परंपरागत मूल्यों का सफलतापूर्वक प्रशासनिक कार्यों में समावेश किया गया है

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम

गांधीवादी सिद्धांत पर आधारित यह अधिनियम ग्रामीण इलाकों में कम से कम 100 दिनों का रोजगार सुनिश्चित करता है जो समुदाय की आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देता है।

पंचायती राज

केरल का पीपल्स प्लान कैम्पेन

1996–2001 केरल में इस अभियान ने स्थानीय स्वायत्त शासन को प्रोत्साहित किया और स्वास्थ्य, शिक्षा, और आधारभूत संरचना में महत्वपूर्ण सुधार लाए।

पारदर्शिता और जवाबदेही

- ई–गवर्नेंस पहल
- उदाहरण के लिए
- आधार और सार्वजनिक वितरण प्रणाली

सरकार की योजनाओं की पारदर्शिता और दक्षता में सुधार किया है, जिससे भ्रष्टाचार कम हुआ और जवाबदेही बढ़ी।

पर्यावरण संरक्षण

चिपको आंदोलन

यह आंदोलन प्रशासनिक नीतियों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हुए वन संरक्षण के लिए कड़े कानून और जागरूकता लाने में सफल रहा।

संतुलित विकास

प्रधान मंत्री जन–धन योजना

यह पहल वित्तीय समावेशन को प्रोत्साहित करती है जिससे हर घर को बैंकिंग सुविधाओं का लाभ मिल सके। यह संतुलित आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करती है, जिससे हाशिए पर बैठे समुदायों को सशक्त बनाया जा सके।

नैतिक प्रशासन

लोकपाल और लोकायुक्त अधिनियम

ये संस्थाएँ सार्वजनिक कार्यालयों में भ्रष्टाचार की जाँच और समाधान के लिए कार्यरत हैं, जिससे प्रशासनिक प्रथाओं में नैतिक मानकों को बनाए रखने में मदद मिलती है।

इन उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि भारतीय मूल्य कैसे प्रशासनिक ढाँचे में समाहित होकर शासन और सामाजिक कल्याण में वास्तविक सुधार ला सकते हैं।

परिवार और समाज में भूमिका

भारतीय परंपरा में परिवार और समाज को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। संयुक्त परिवार व्यवस्था जिसमें कई पीढ़ियाँ एक साथ रहती हैं, समाज की स्थिरता और समर्थन का प्रतीक है। इस व्यवस्था में पारस्परिक समर्थन सहयोग और सामाजिक जिम्मेदारियाँ निभाई जाती हैं।

शिक्षा में परंपरागत ज्ञान

भारतीय शिक्षा प्रणाली में योग आयुर्वेद और वेदों का ज्ञान शामिल है। ये न केवल शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देते हैं बल्कि जीवन के विभिन्न पहलुओं के प्रति एक संतुलित दृ ष्टिकोण प्रदान करते हैं। गुरुकुल प्रणाली में छात्रों को न केवल शैक्षिक ज्ञान बल्कि जीवन के मूल्यों का भी शिक्षण दिया जाता था।

धर्म और आध्यात्मिकता

भारतीय समाज में धर्म और आध्यात्मिकता का महत्वपूर्ण स्थान है। ये तत्व मानसिक शांति और संतुलन को बढ़ावा देते हैं। मंदिर मस्जिद गुरुद्वारा और चर्च जैसे धार्मिक स्थल समाज में एकजुटता और सामुदायिक भावना को मजबूत करते हैं।

पर्यावरण संरक्षण

भारतीय परंपरा में प्रकृति और पर्यावरण का संरक्षण महत्वपूर्ण है। वृक्षों नदियों और पर्वतों को देवता के रूप में पूजा जाता है। यह दृष्टिकोण पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने और प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा के लिए प्रेरित करता है।

सामाजिक न्याय और समानता

भारतीय परंपरा में सामाजिक न्याय और समानता के मूल्य भी महत्वपूर्ण हैं। प्राचीन भारतीय समाज में वर्ण व्यवस्था के बावजूद सामाजिक समानता की अवधारणा हमेशा से रही है। आधुनिक समय में यह मूल्य संविधान और कानूनों के माध्यम से समाज में लागू किए जाते हैं।

भारतीय ज्ञान और परंपरा के ये तत्व न केवल हमारी सामाजिक व्यवस्था को मजबूत बनाते हैं बल्कि इसे मानवतावादी और सामुदायिक दृष्टिकोण से भी समृद्ध करते हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार समस्त प्राचीन धार्मिक ग्रंथों जैसे महाभारत के प्रमुख शान्तिपर्व ऋग्वेद उपनिषद आदि के अध्ययन से पता चलता हैं कि इनके समय में सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था का स्वर्ण युगीन समय था महिलाओं को हर क्षेत्र में समानता एवं प्रतिष्ठा प्राप्त थीं

शासक का प्रमुख कर्तव्य प्रजापालन समझा जाता था परंतु धीरे–धीरे विकास के फलस्वरुप एवं पश्चिमी सभ्यता के संपर्क में आने के कारण व्यक्तिगत एवं सामाजिक मूल्यों में गिरावट आने लगीं और भावनात्मक रिश्तों का स्थान भौतिक सुख और भोग विलास की पृवत्ति ने ले लिया जिससे सामाजिक आर्थिक राजनीतिक सभी क्षेत्रों में भ्रष्टाचार अत्याचार अमानवीयता सांप्रदायिकता एवं जाति–व्यवस्था और संयुक्त परिवार के स्थान पर एकल परिवार की प्रवृत्ति बढ़ रही है इसलिए इन सारी प्रवृत्तियां को दूर कर सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था को पहले की तरह आदर्शपूर्ण अनुशासनात्मक एवं नैतिक तथा आध्यात्मिक गुणों से परिपूर्ण करने हेतु आवश्यक है कि देश के जन कल्याण में लगे जनप्रतिनिधियों से लेकर देश के प्रत्येक व्यक्ति के ह्रदय में भारतीय ज्ञान एवं परंपरा के आदर्श एवं मूल्यों के महत्व को जगाया जाए जिससे भारत एक बार फिर से आर्थिक रूप से नहीं अपितु अपनी संस्कृति एवं बहुमूल्य रीति रिवाजों एवं परंपराओं के आधार पर भी सोने की चिड़िया कहलाए

आभार

मैं इस रिसर्च पेपर को लिखने में जिन लोगों ने मेरा मार्गदर्शन और मेरी सहायता की हैं उनके प्रति आभार प्रकट करती हूं जैसे मेरे महाविद्यालय के शिक्षक जहां से मैंने शिक्षा ग्रहण की है और अभी मैं जिस महाविद्यालय में अतिथि विद्वान के रूप में कार्यरत हूं वहां के मेरे शिक्षक साथी और कुछ महत्वपूर्ण किताबें अर्थात उनके लेखक इन सभी के द्वारा यह रिसर्च पेपर लिखने में मुझे बहुत सहायता प्राप्त हुई हैं

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. किताब – भारतीय ज्ञान एवं परंपराः विविध आयाम
2. लेखक – बालकृष्ण राय
3. प्रकाशन तिथि – 1 जनवरी 2023
4. प्रकाशक – क्षिप्रा प्रकाशक
5. किताब – भारतीय सामाजिक व्यवस्था
6. लेखक – राम आहूजा
7. प्रकाशन वर्ष – 1995
8. प्रकाशक – रावत प्रकाशक
9. किताब – भारतीय राजनीति समन्वय एवं सुधार
10. लेखक – सुभाष कश्यप विश्व प्रकाश गुप्त
11. प्रकाशन तिथि – 1 जनवरी 2006
12. प्रकाशक – राधा प्रकाशक